International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

भारतीय ज्ञान परंपरा व प्रणाली

डॉ. राकेश कुमार *

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, ऐ.के. गोपालन डिग्री कॉलेज, सुल्तानगंज, भागलपुर तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

Corresponding Author: *डॉ. राकेश कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19703532

सारांश

प्राचीन ज्ञान परंपरा ने हमारे सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा शिक्षा का स्वरूप एक व्यावहारिकता को प्राप्त करने के लिए जीवन की सहायक सिद्ध हुआ संपूर्ण वैदिक काल में जैसे रामायण, महाभारत, पुराण,ग्रंथ, दर्शन, स्मृति ग्रंथ,काव्य, नाटक ,व्याकरण तथा ज्योतिषी शास्त्र संस्कृत भाषा में उपलब्ध कराया था इनकी महिमा को आगे बढ़ाने के लिए जो हमारे भारतीय सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करने में पूर्णता सिद्ध होती है संस्कृत ज्ञान से ही संस्कार और समाज का निर्माण करती है संस्कार से कई ऐसे महत्वपूर्ण बिंदु है जैसे कायिक , वाचिक मानसिक पवित्रता के साथ पर्यावरण, पर्यावरण को शुद्ध करता है जिससे हमारे शरीर के पूरे अंग को स्वच्छ बना के रखना है हमारे समाज के बदलते परिवेश और भारतीय मूल्य के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को अच्छा बनाना अति आवश्यक माना गया है यह हमारी समाजसेवी व्यवस्था प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को लिए बिना नहीं चल सकती है क्योंकि एक तरफ हम तो आज के इतिहास के दौर तेजी से हमारी ओर अग्रसर है वह हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं इस आधुनिक काल में हमारी वही स्थिति हुई होगी जैसा की हमने अभी के देखा करते हैं जैसा की उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हुई है तो हमारे लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी वह बौद्ध और जैन धर्म के काल में भी रही यह विभिन्न विश्वविद्यालय की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था को स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है लेकिन अब विगत 200 से 300 वर्षों में हुआ है हमारे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा में इसे उचित रूप में दिखाने का आवश्यक काम करता है प्राचीन काल में ऋषि मुनियों के द्वारा एक आस्था का मूल्य, आदर्श, दर्शन ,ज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, पद्धति, कर्म, भक्ति इत्यादि जीवन के भावनाएं समाहित है यह परंपरा किसी एक तत्व को लेकर चलने वाली नहीं वरन, एक व्यापक रूप है भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है इस जिज्ञासा के मन में उड़ने ही कल्पना वेदों की ओर चल जाती है और वेद का भारतीय संस्कृति ज्ञान और सभ्यता का मूल है इनमें समस्त भाषाओं का ज्ञान, ज्ञान के समस्त स्वरूपों का जन्म हुआ है संस्कृति को उत्तरी कहे जाने वाली हिंदी इस ज्ञान को विभिन्न बुद्धियों के रूप में प्रत्येक छात्रों तक पहुंचती है इस ज्ञान परंपरा का निर्वहन करते हुए हिंदी परंपरा अपने कर्म पद पर अग्रसर होता है हिंदी साहित्य से भारतीय ज्ञान परंपराएं सनातन धर्म के वशिष्टिया से परिपूर्ण होकर इस विश्व को निरंतर पादीपुरा नेता का आभास कराती है इसका प्रभाव विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त किए जाते हैं भारतीय संस्कृति के विभिन्न अंग प्राचीन जीवन मूल्य पंच महायज्ञ, शोडेक्स संस्कार, तीन ऋणी, भारतीय आयुर्वेद पद्धतियों, भारतीय शिक्षा पद्धति ,वैदिक ज्ञान, उपनिषद विद्यालय पुराणों में निहित व्यवहारिक ज्ञान कौशल की और था सामग्र शरीर वह मानसिक स्वास्थ्य को आकार देने वाली अष्टांग योग पद्धति प्राकृतिक के प्रति भारतीय साहित्य में एक अद्भुत पोषण स्वास्थ्य व संरक्षण देने का काम करती है दर्शन शास्त्रों में व्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जाएं विभिन्न शक्तियों के रूप धारण कर विश्व के कान–कान में भारतीय ज्ञान परंपराओं की आवाज बनकर अभिव्यक्त करती है। निष्कर्ष: प्राचीन ज्ञान प्रणाली विश्व के अन्य देशों से श्रेष्ठ मानी जाती थी भारत में कई अन्य देश के छात्र ज्ञान अर्जन हेतु भारत आया करते थे।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-03-2026
- **Accepted:** 18-04-2026
- **Published:** 23-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 756-762
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमार र. भारतीय ज्ञान परंपरा व प्रणाली. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):756-762.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य बिंदु: ज्ञान, परंपरा, संस्कृति, सांस्कृतिक मूल्य, पाठ्यचर्या ।

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय इतिहास के काल में भारतीय ज्ञान परंपराएं और संस्कृति मानवता को प्रोत्साहित करती रही है पुराणों में ज्ञान को और प्रतिमा माना गया है भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला ,पल्लवी, उज्जैनी ,काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा शोध के प्रमुख केंद्र रहे थे, तथा यहां कई देशों के विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करने के लिए आते थे प्राचीन भारतीय इतिहास के काल में ज्ञान विज्ञान का गौरव में रहा है इस समस्त परंपरा को आलोकित करने वाली है । संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान की मेहनती श्रृंखला है ,जो वर्तमान वैज्ञानिक जगत के लिए सर्वश्रेष्ठ का विषय रही है। आज जहां एक और आधुनिक विज्ञान समुन्नात्मक अवस्थित में दिखाई दे रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके दोष एवं नकारात्मक परिणाम भी दिखाई दे रहा है। भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और ज्ञान को बनाए हुए हैं। इसके विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच घनिष्ठ ने भारत देश को बनाया है जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वेद तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है इन दोनों प्रख्यात चिंतक जय नंदकुमार जी ने प्राध्यापकों के कार्यक्रम में बताया था कि हजारों साल पहले जब वेदों की रचना हुई है तो ऐसे सैकड़ो उदाहरण ऋग्वेद में मिलते हैं ऋग्वेद की शुरुआती ऋचाओं में कहा जाता है कि अपने आप को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करो ,तभी भला होगा। विदेशी टैक्टर ने हमेशा से ही हमारे ज्ञान परंपरा को दबाकर रखने की कोशिश की सेवा भाव को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश की गई जिसके कारण हमने अपनी समृद्धि ज्ञान को दिया है आज फिर से हमें अपने ज्ञान परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को समझना समझने और अपने तरीकों से परिभाषित करने कीप जरूरत है । अपने ज्ञान परंपरा सामाजिक व्यवस्था और जीवन शैली को बाजारवाद से बचने की जरूरत है हमें पश्चिमी सभ्यताओं और विदेशी ज्ञान विज्ञान को दरकिनार कर अपनी परंपरा और मान्यताओं का पुनरुत्थान करते हुए भारतीयता में पूरी तरह मानना होगा सभी विचारधाराओं के लोगों से संवाद करना होगा और उसके साथ लेकर चलना होगा हमारी परंपरा विविधताओं का सम्मान करने की है और उसमें एकता स्थापित करने की है जिसे आज अच्छी तरह से व्यवहार में उतरना होगा ताकि पूरे विश्व में एक बड़ी ताकत के रूप में ला सके।

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली का स्वरूपः

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समग्र एवं बहुआयामी व्यवस्था थी, जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती थी। यह प्रणाली मौखिक8 परंपरा पर आधारित थी और गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान का संप्रेषण किया जाता था। शिक्षा के प्रमुख केंद्र गुरुकुल, आश्रम और मंदिर थे, जहाँ विद्यार्थियों को न केवल सैद्धांतिक बल्कि व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी। इस ज्ञान प्रणाली के चार प्रमुख स्तंभ थेः

1. वैदिक ज्ञान–

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार वेदों में निहित है। चार वेदकृ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदकृज्ञान के प्राचीन स्रोत हैं, जिनमें जीवन, ब्रह्मांड और ईश्वर के रहस्यों की व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों और आरण्यकों में दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों का समावेश है। वेदों में न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान है, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और अन्य विज्ञानों का भी विस्तृत उल्लेख मिलता है।

2. दर्शनशास्त्र–

भारतीय ज्ञान प्रणाली में छह प्रमुख दार्शनिक परंपराएँ विकसित हुईंकृ सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत। ये दर्शन जीवन, ब्रह्मांड, आत्मा, कर्म, मोक्ष और यथार्थ को समझने के लिए एक सुसंगत प्रणाली प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, योग दर्शन आत्मिक और शारीरिक संतुलन की बात करता है, जबकि सांख्य दर्शन सृष्टि के तत्वों की व्याख्या करता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन तर्क, प्रमाण और पदार्थ के स्वरूप को समझाने का प्रयास करते हैं।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण–

भारतीय विद्वानों ने गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धातु विज्ञान और कृषि विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोलशास्त्र को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया, जबकि चरक और सुश्रुत ने चिकित्सा और शल्य चिकित्सा में महत्वपूर्ण अनुसंधान किए। वैदिक काल में जल प्रबंधन, वास्तुशास्त्र और कृषि तकनीकों

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

का भी विस्तार हुआ। यह ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि प्रयोगात्मक भी था, जिससे समाज को व्यावहारिक लाभ प्राप्त हुआ।

4. आध्यात्मिकता और नैतिकता–

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और आध्यात्मिकता का विशेष स्थान था। धर्मशास्त्र, पुराण, महाकाव्य (रामायण और महाभारत) तथा नीति ग्रंथों के माध्यम से व्यक्त प्राचीन ज्ञान प्रणाली के उद्देश्यः

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल जानकारी प्राप्त करने का साधन नहीं थी, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। यह प्रणाली आत्मज्ञान, नैतिकता, सामाजिक कल्याण, प्राकृतिक संतुलन और वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा देने पर केंद्रित थी। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थेः

1. आत्मज्ञान एवं मोक्ष प्राप्ति–

प्राचीन भारतीय शिक्षा का अंतिम उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति था। वैदिक ग्रंथों और उपनिषदों में आत्मज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यह शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि आत्म–चिंतन, ध्यान और योग के माध्यम से आंतरिक शांति प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाती थी। गीता में कहा गया हैकृ ''विद्या विनय संपन्ने'' अर्थात सच्चा ज्ञान विनम्रता और आत्मबोध को जन्म देता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को मोक्ष के पथ पर ले जाना था, जहाँ वह भौतिक बंधनों से मुक्त होकर ब्रह्म (परम सत्य) की प्राप्ति कर सके।

2. नैतिकता और सद्गुणों का विकास–

प्राचीन ज्ञान प्रणाली में नैतिकता और सद्गुणों को विशेष महत्व दिया गया था। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्वत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक अच्छे और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना भी था। सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग, संयम और सहिष्णुता जैसे गुणों की शिक्षा दी जाती थी। गुरु–शिष्य परंपरा में गुरु केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। महाभारत, रामायण और नीति शास्त्रों में नैतिकता के आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

3. सामाजिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण–

प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को समाज का एक सक्रिय और जिम्मेदार सदस्य बनाने पर केंद्रित थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं था, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देना भी था। शिष्य गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज में विभिन्न सेवाओं में संलग्न होते थे, जैसे–राजनीति, प्रशासन, कृषि, व्यापार और चिकित्सा। मनुस्मृति और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों में सामाजिक संगठन और नीति–निर्माण के सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

4. प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग–

प्राचीन ज्ञान प्रणाली में प्रकृति और पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया था। कृषि, जल प्रबंधन, वन संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेद और अथर्ववेद में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को दर्शाया गया है। प्राचीन नगर नियोजन, जल संचयन प्रणालियाँ (जैसे दृ स्टेप्पड वेल्स, बावड़ियाँ), और आयुर्वेदिक चिकित्सा में जैव–विविधता का संरक्षण इसी संतुलित दृष्टिकोण का प्रमाण हैं।

5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति–

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक सोच और तकनीकी नवाचारों को भी बढ़ावा देती थी। आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुशास्त्र और अभियंत्रण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की गईं। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोलशास्त्र में अद्भुत योगदान दिया। चरक और सुश्रुत ने आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किए। वास्तुशास्त्र में नगर निर्माण और भवन निर्माण की उत्कृष्ट प्रणालियाँ विकसित की गईं।

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषताएँः

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समृद्ध और व्यापक शिक्षा प्रणाली थी, जिसमें मौखिक परंपरा, समग्र दृष्टिकोण, आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक अनुसंधान का समावेश था। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थींः

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. मौखिक परंपरा और गुरु–शिष्य परंपरा:

प्राचीन भारत में ज्ञान मौखिक रूप से गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से संचारित होता था। विद्यार्थी गुरुकुलों में रहकर वेद, उपनिषद, दर्शन, गणित, चिकित्सा, संगीत और अन्य विषयों की शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यावहारिक और नैतिक प्रशिक्षण का भी विशेष ध्यान रखा जाता था। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज में विभिन्न सेवाओं के माध्यम से योगदान देते थे।

2. समग्रता एवं अंत:विषयक दृष्टिकोण:

भारतीय ज्ञान प्रणाली में विभिन्न विषयों का समन्वय किया जाता था। इसमें दर्शन, गणित, विज्ञान, संगीत, चिकित्सा, कला और धर्म का समावेश था। यह समग्र दृष्टिकोण आधुनिक अंत:विषयक शिक्षा प्रणाली के समान था। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद में केवल चिकित्सा ही नहीं, बल्कि आहार, योग और मानसिक स्वास्थ्य का भी उल्लेख मिलता ळें

3. आध्यात्मिकता और नैतिकता का समावेश:

प्राचीन शिक्षा प्रणाली केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि नैतिकता और आध्यात्मिकता को भी समान रूप से महत्व दिया जाता था। विद्यार्थी को सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग और संयम जैसे गुण सिखाए जाते थे। गीता, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी जाती थी।

4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अनुसंधान:

भारतीय मनीषियों ने गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, धातु विज्ञान, वास्तुशास्त्र और जल प्रबंधन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने गणित और खगोलशास्त्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जबकि चरक और सुश्रुत ने चिकित्सा और शल्य चिकित्सा को उन्नत किया। प्राचीन भारतीय जल प्रबंधन प्रणालियाँ, भवन निर्माण तकनीक और धातु विज्ञान आज भी सराही जाती हैं।

प्राचीन भारत में शिक्षण की भाषा:

प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए दो प्रणालिया विकसित हुई। जिनमें प्रथम वैदिक एवं द्वितीय बौद्ध। वैदिक प्रणाली में शिक्षण की भाषा का माध्यम संस्कृत थी साथ ही बौद्ध प्रणाली में शिक्षण का माध्यम पाली भाषा में था। प्राचीन भारत में संस्कृत भाषा में शिक्षा का प्रचार–प्रसार बहुत अधिक जन मानस तक पहुँचा। एक समय था जब सभी गुरु शिष्य आपस में अपनी दिनचर्या की सभी बातें संस्कृत भाषा में ही किया करते थे। प्राचीन समय में संस्कृत जनमानस की सर्वाधिक लोकप्रिय और सम्मान की भाषा थी। हमारे ऋषि–मुनियों ने अपने ग्रंथों को संस्कृत भाषा में लिखा है। जिनके आज तक अन्य भाषाओ में निरंतर रूपांतरण चल रहे हैं। हमारे देवी–देवताओं की स्तुतियां, उनके मंत्र, उपासना विधि, ये सभी संस्कृ त भाषा में ही हमें मिलते है। जिसका तात्पर्य है की प्राचीन समय में संस्कृत भाषा का महत्व एवं उपयोग अधिक मात्रा में होता था।प्राचीन भारत में हमें दोनों प्रकार की शिक्षण पद्धतियों के उल्लेख मिलते हैं–

1. औपचारिक शिक्षण पद्धति:

औपचरिक शिक्षण पद्धति के अंतर्गत शिष्यों को गुरुकुलों, आश्रमों एवं मंदिरों में अपने गुरु के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। गुरुकुल प्रायः वनों व जंगलों में स्थापित होते थे। गुरु की आज्ञा का पालन ही शिष्य के जीवन का अंतिम सत्य होता था। गुरु कृपा से ही कोई शिष्य अन्य शिष्यों से आगे निकल जाता था। प्राचीन भारत में औपचरिक शिक्षण पद्धति में शिष्य के हृदय में गुरु के प्रति अपार आदर और सम्मान होता था। शिष्य अपने गुरु के वचनों का मान रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति भी खुशी–खुशी दे देता था। गुरुकुल में शिष्य का समग्र विकास होता था। शिष्य को भाषा, संस्कृ ति, धर्म, परोपकार, देवी–देवता, युद्ध, शांति आदि का ज्ञान गुरुकुल में ऋषि मुनियों द्वारा दिया जाता था। आश्रम में अबोध बालक आता था परंतु अपनी शिक्षा पूर्ण करके जाते समय वह एक तेजस्वी और विराट व्यक्तित्व का धनी बनकर जाता था। प्राचीन समय के गुरुकुल और आश्रम ही उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे। प्राचीन भारत का शिष्य कितना भी पराक्रमी और शक्तिशाली हो जाने के बाद भी अपने गुरु के समक्ष सदैव नतमस्तक ही रहता था।

2. अनौपचारिक शिक्षण पद्धति:

अनौपचारिक शिक्षण पद्धति में माता को शिशु की प्रथम और श्रेष्ठ गुरु माना गया है एवं पिता को प्रथम शिक्षक माना गया है। प्राचीन भारत में बालक, परिवार, पुरोहित, पंडित, संन्यासी और विभिन्न

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

त्योहारों से अपने धर्म, संस्कृति, मान्यताओ को जानता है और अपने जीवन में इन मान्यताओ को समाहित करता है। इस प्रकार अनौपचारिक शिक्षा अपने घर एवं घर के आसपास के माहोल से प्राप्त होती है।

प्राचीन भारत के प्रमुख गुरुकुल और आश्रम

प्राचीन भारत में ऐसे अनेक गुरुकुल और आश्रमों में शिक्षण का कार्य होता था जिन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को सदैव जीवंत रखते हुए ऐसे मानवों का निर्माण किया जो भारत देश के महापुरुष बने। जिनका पराक्रम और तेज अतुलनीय है। प्रमुख विशेष महत्व के गुरुकुल एवं आश्रम इस प्रकार है, जिनपर भारतीय समाज और संस्कृति को सदैव ही गर्व रहेगा –

1. **सांदीपनि आश्रम** – सोलह कलाओं के अवतार भगवान श्री कृष्णजी भी स्वयम् शिक्षा प्राप्ति के लिए महर्षि सांदीपनिजी के आश्रम उज्जैन में आए, इनसे शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने प्राचीन भारत में गुरु–शिष्य परम्परा का मान बढ़ाया।
2. **बृहद आश्रम**– भगवान राम के समय में महर्षि वशिष्ठ का आश्रम बहुत प्रसिद्ध था यहां राज राजा दिलीप तपस्या करने गए थे इसी आश्रम में विश्वामित्र जी को ब्रह्म तत्व की प्राप्ति हुई थी ।
3. **गुरु दोण का आश्रम**– महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य का आश्रम आजतक जनमानस को याद है। गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल से अर्जुन जैसे विश्व प्रसिद्ध धनुर्धर निकले ।

उपरोक्त के अलावा भी अनेक गुरुकुल प्राचीन भारत में थे, जिनमें संस्कृत भाषा के माध्यम से शिक्षण का कार्य किया जाता था। यहाँ लौकिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा का विशेष महत्व रहता था।

आलेखन समीक्षा–

भारतीय ज्ञान परंपरा की गौरवगाथा अद्वितीय ज्ञान और परंपरा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और अलौकिक, धर्म और कर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के काल से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए एक समान जैसे मूल्यों पर बल देती थी। वेद ग्रंथों में विधा को मानवता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया । कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे। और विधा वह है जो मुक्ति का मार्गदर्शन करे। इसके अलावे जो भी कर्म है वह सब मात्र पूर्णता दैने वाले है। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में शामिल कर इसके अनुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। आवास, देवालय, स्कूल तथा गुरुकुलों एवं आश्रमों में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष प्राचीन है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान सहित सभी क्षेत्रों के लिए अद्भुत भंडार है। भारतीय नजरीये से ही ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी सोच को बदल कर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। पश्चिम के विकसित मॉडल को छोड़कर हम संसार में खुशियाँ ला सकते हैं। हम सबों ने अब तक जो भी अध्ययन कर अर्जित किया है, ज्ञान संगम जैसे कार्यक्रमों में शामिल होकर लगता है कि वह एक तरफा हो गया है। यदि हर विषय को हम पश्चिम देशों के नजरिये से देखते हैं तो भारतीय ज्ञान परंपरा का अपमान होगा। इसमें हमारी भी कमजोरी रही है कि हम भारतीय अपनी परंपरा, संस्कृति, ज्ञान, और यहाँ तक की महान विभूतियों को तब तक तरजीह नहीं देते, जब तक कि विदेशों में उसे सम्मान स्वरूप स्वीकार ना कर ले। यही कारण है कि आज यूरोपीय देशों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होमयोपैथ, जैसे उपचार प्रसिद्ध प्राप्त कर रहे हैं, और हम भारतीय उन्हें भूले जा रहे हैं या पिछे छोड़ रहे हैं। हमें अपनी नीम हल्दी, जडी– बूटियों और गोमूत्र का ख्याल तब आता है, जब अमेरिका उस पर शोध कर लेता है, प्राचीन काल के योग का हमने तिरस्कार कर दिया और जब वही योग 'योगा' बन कर आया तो हम उसके दिवाने हो गयें। वर्तमान में पश्चिमी देशों के लोग भारतीय परंपरा से संस्कार युक्त और मंत्रोच्चारण के बीच वैवाहिक बंधन में बंधने को आतुर है, और हमें हमारी मूल संस्कृति, संस्कार, रीति, रस्म, रिवाजों से युक्त पौराणिक परंपरा बकवास और बेकार लगतीं है।

हमारा देश भारत विविधताओं का देश है, अनेकताओं में एकता का देश है, हमारे यहाँ की प्रचलित कहावत है, 'तीन डेग पर पानी बदले और तीन कोस पर वाणी। 'हमारे राष्ट्र में प्रत्येक प्रांतों की अपनी भाषा एवं बोली है। भाषाओं के भिन्नता के बावजूद भी अंग्रेजी भाषा को बोलचाल का माध्यम बनाया जाता है। हेडलाइन्स पत्रकारिता के माध्यम से आज पत्र – पत्रिकाएं अनेकों समाजिक विसंगतियों से भरी

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पड़ी है। आज भारतीय यूवा गलत तरीके से प्रसारित हो रहे भडकाऊ विज्ञापनों से प्रभावित हो रहें हैं। भारत भूमि की प्राचीनता, इससे उपजी हुई सभ्यता और संस्कृति से सिद्ध होती है भारत भूमि की भौगोलिक परिदृश्य से जुड़ी हुई है भारत की ज्ञान परंपरा। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में मौजूद है, भू– सांस्कृतिक और सभ्यतागत विशेषताओं का आकलन।

वर्तमान में हम अपने आचरण एवं आदर्शों का त्याग कर रहे हैं, और विदेशी इसे स्वीकार कर रहे हैं, हम भारतीय आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनदेखी करते हुए, अपनी संस्कृति और उसकी समृद्ध विरासत को ठुकरा रहे हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच नजदीकीयों ने भारत को गौरवान्वित करने का काम किया है, जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित हैं। इसलिए हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, वेद, तंत्र एवं योग का संगम है। भारतीय ज्ञान– विज्ञान परंपरा को स्थापित करने का प्रयास बहुत पहले ही किए जाने चाहिए थे, लेकिन बाजारवाद मानसिकता के कारण हमने अपने गौरवशाली इतिहास के पन्ने कभी पलट कर देखने की कोशिश ही नहीं की। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि, जिस समाज ने मुझे नयी पहचान दी, हमें सब कुछ दिया, उसके लिए भी हमें कुछ करना चाहिए। सूचना के स्तर पर ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा का अंतिम पड़ाव नहीं होता है, ब्लकि समझ, विचार एवं बुद्धि से अर्जित ज्ञान ही मानवीय जीवन बोध का मूल पहलू कहा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं पश्चिमी ज्ञान परंपरा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि पश्चिमी संस्कृति के भौतिकतावाद ने तरक्की तो बहुत की है, लेकिन यह उन्नति मानसिक खुशहाली को साकार करने से वंचित रह जाती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का बीजारोपण अतीत में आज से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व में हुआ था। लेकिन उसके स्वरूप के दर्शन, वैदिक काल के आरंभ में होतें हैं। इस काल में शिक्षा पर ब्राह्मणों का आधिपत्य था। अतः कुछ लेखकों ने वैदिक कालीन शिक्षा को ''ब्राह्मणीय शिक्षा'' और कुछ ने ''हिन्दू– शिक्षा '' की संज्ञा दी है।

वैदिक साहित्य में 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है, जैसे 'विधा', 'ज्ञान', 'बोध' और ' विनय'। प्राचीन भारतीय विद्वानों के समान आधुनिक शिक्षाशास्त्रीयों ने भी 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित दौनो अर्थों में किया है। डॉ ए एस अल्तेकर के अनुसार– शिक्षा का व्यापक अर्थ में, शिक्षा का तात्पर्य है– व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना। इस दृष्टि से शिक्षा, आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। सीमित अर्थ में, शिक्षा का अभिप्राय उस औपचारिक शिक्षा से है जो व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व छात्र के रूप में गुरु से प्राप्त होती थी।

प्राचीन काल में शिक्षा को ना तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और ना जीवनयापन करने का साधन। ठीक इसके विपरीत, शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो व्यक्ति को अपना चहुंमुखी विकास करने, उत्तम जीवन व्यतीत करने में सहायक होता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति को पथ– प्रदर्शित करने वाला प्रकाश माना गया है। उक्त कथन की पुष्टि डॉ ए एस अल्तेकर ने इस प्रकार किया है– '' वैदिक युग से आज तक शिक्षा के सम्बन्ध में भारतीयों की मुख्य धारणा यह रही है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ– प्रदर्शन करता है। ''

प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। जिस का यह प्रमाण है कि शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत, अंत दृष्टि, अन्तर्ज्योति, ज्ञान– चक्षु और मानव का तीसरा नेत्र माना जाता है। उस युग के भारतीयों का मानना था कि शिक्षा का प्रकाश, व्यक्ति के सब संशयों का उन्मूलन और उनकी सभी बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा से प्राप्त अंत दृष्टि, व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा मनुष्य को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है, उसे जीवन के यथार्थ समझने की क्षमता प्रदान करतीं हैं और उसे भव सागर को पार कर के, मोक्ष– प्राप्ति में मदद करती है। शिक्षा अन्य धारणाओं को व्यक्त करके भारतीयों में यह विश्वास व्यक्त किया है कि, शिक्षा कामधेनु का कल्पतरु के समान व्यक्ति की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करती है और उसका सर्वांगीण विकास करती है। इसी विश्वास के आधार पर डॉ ए एस अल्तेकर ने अपना विचार व्यक्त किया है कि– '' शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्त्रोत माना जाता था, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक तथा क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके, हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा, प्राचीन भारत दर्शन,ध्वन्यात्मक अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान,अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्कशास्त्र, जीवन जगत् से जुड़ी संभावनाएं, आयुर्वेद विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान की स्थापना करके मानव जाति की उन्नति में अपना अमूल्य योगदान दिया है। भारतीय ज्ञान परंपराओं का विश्व पटल पर अमिट प्रभाव रहा है। विश्व पटल पर चाहे राजनीतिक हो या धार्मिक, आर्थिक हो या सामाजिक, संस्कृति हो या सभ्यता, ज्ञान हो या कौशल, योग हो या व्यवहार, भाषा हो या विज्ञान, खोज हो या अनुसंधान, तर्क हो या विश्लेषण सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरायें अपना प्रभाव व्यक्त करते रही है। इस प्रकार हमारे भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को अनेको प्रकार से योगदान देकर लाभान्वित किया है। भारत ने ही विश्व को बौद्ध, जैन और सिख पंथ दिया है। भारत ने विश्व को गुरु परंपरा दी है। भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रेरणा आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव, प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे पहलुओं से निपटने के लिए व्यवहारिक सुझाव देती है और यह ज्ञान का विशाल भंडार प्रदान करती है। जिसका सद् उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे का मार्ग दर्शन करने के लिए किया जाता है।

अतः विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को ना केवल भावी पीढ़ियों के लिए पोषित और संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है, बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिये इसे बढाने और इसे उपयोग में लाने की आवश्यकता है। वास्तव में उत्तम ज्ञान ही एक स्वस्थ समाज को उसके शीर्ष शिखर तक पहुंचाने में योगदान देती है। सभी योनियों में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है। अतः श्रेष्ठों का कार्य अथवा जिम्मेदारी भी उत्तम और कल्याणप्रद होना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कार्की वी.के. भारतीय तत्त्वज्ञान की परंपरा. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत प्रकाशन; 2018.
2. अग्रवाल पी. प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान प्रणाली. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट; 2020.
3. आर्य एस. भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2019.
4. उपाध्याय के. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास; 2016.
5. कृष्णमूर्ति बी. संस्कृत ग्रंथों में विज्ञान और दर्शन. पुणे: भारतीय विद्या भवन; 2015.
6. चौबे आर. भारतीय न्याय प्रणाली और तर्कशास्त्र. वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन; 2017.
7. दीक्षित एम. भारतीय चिकित्सा पद्धति: सिद्धांत और व्यवहार. मुंबई: मणिपाल पब्लिशिंग; 2021.
8. द्विवेदी पी. भारतीय समाज में वेदों की भूमिका. लखनऊ: भारती प्रकाशन; 2018.
9. नागर डी. भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव. कोलकाता: ओरिएंट ब्लैकस्वान; 2020.
10. पटेल जे. योग और आयुर्वेद: एक पारंपरिक ज्ञान प्रणाली. चेन्नई: नवभारत प्रकाशन; 2019.
11. पाण्डेय आर. भारत में प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समन्वय. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2017.
12. मिश्रा एस. भारतीय खगोलशास्त्र: परंपरा और विकास. वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट; 2022.
13. रामचन्द्रन के. भारतीय गणितज्ञों का योगदान. मुंबई: संस्कृत भारती; 2018.
14. वर्मा ए. भारतीय संगीत और कला में विज्ञान का समावेश. जयपुर: सुनीता पब्लिकेशन्स; 2019.
15. शुक्ला जी. धर्म, दर्शन और विज्ञान: भारतीय दृष्टिकोण. दिल्ली: हिन्द पब्लिकेशन्स; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. राकेश कुमार हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान एवं शिक्षाविद् हैं। वर्तमान में वे ए. के. गोपालन डिग्री कॉलेज, सुल्तानगंज (भागलपुर) में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। उनका शोध एवं अध्यापन हिंदी भाषा, साहित्य और समकालीन विमर्शों पर केंद्रित है तथा वे अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

© 2026 डॉ. राकेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/